INDIAN COUNCIL OF SOCIAL SCIENCE RESEARCH

Mandatory details

(Candidates are instructed not to disclose their identity i.e. name, institution etc. in this part of the form)

1. Percentage of Marks in Post-Graduation:________72.3________

2. UGC-NET Qualification (Yes/No): ________yes_________

Research Proposal

1.	**Title of the Research Proposal** (Title must be same as approved by the DRC/Statutory Body of the Institution)	**कविरत्न मेधाव्रताचार्य की अनतिख्यात रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन** **(Kaviratna Medhāvratācārya kī anatikhyāta racnāoań kā Samīkşātmaka Adhyayana)**
2.	**Abstract** (approx. 300 words)	साहित्य समाज के उत्थान-पतन, विकास-ह्रास, उन्नति-अवनति आदि का सम्यक् प्रतिबिंबन करता है। अतः साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है। संस्कृत साहित्य की काव्यधारा वैदिक युग से लेकर अद्यावधि अनवरत अविरल प्रवहमान है। भारतीय इतिहास के बर्बरतापूर्ण आक्रमण भी उसे रोक नहीं सके। स्वतान्त्र्यपूर्वकाल के कवियों ने समय की आवश्यकता के अनुरूप निज लेखनी से राजाप्रशस्ति छोड़ सामाजिक विसंगतियों के प्रति जनजागरण किया। आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों ने राष्ट्रोन्नायक नेताओं, समाजसुधारकों व धर्मप्रचारकों की प्रशस्तिपरक जीवनवृत्त-लेखन में चरितप्रधान शैली का अवलम्ब लिया है। पं. अम्बिकादत्तव्यास (शिवराजविजय), अप्पाशास्त्रिराशिवडेकर (तिलकमहाशस्य कारागृहवासः, पञ्जरबद्धशुकः), विधुशेखरभट्टाचार्य (भारतभूमि), भगवदाचार्य (रामानन्ददिग्विजयम्, श्रीमहात्मागांधिचरितम्), पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय (आर्योदयमहाकाव्य), गोपालरावहरि

		(दयानन्ददिग्विजयार्क), पंडिता क्षमाराव (सत्याग्रहगीता, तुकारामचरितम्) तथा पंडित अखिलानन्द शर्मा (दयानन्ददिग्विजयम्, दयानन्दलहरी) आदि अनेक ऐसे प्रसिद्ध संस्कृत साहित्यकार हुए; जिन्होंने अपनी लेखनी से समकालीन समस्याओं तथा कुरीतियों के प्रति जनजागरण किया और समाज, धर्म व देशोन्नायक नेताओं के वन्दनीय चरित को अमरता प्रदान की। इन्हीं सुरभारती के समुपासक महनीय कवियों की पंक्ति में अपनी सर्वतन्त्रस्वतन्त्र लेखनी द्वारा 30 से अधिक ग्रन्थों के लेखक, धर्मप्रचारक व समाजसुधारक कविरत्न मेधाव्रताचार्य भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। जिनकी रचनाएं संस्कृत साहित्य की संरक्षणीय एवं सुपठनीय धरोहर हैं। मुख्यतया स्वामी दयानन्दसरस्वती के जीवनीपरक दयानन्ददिग्विजयमहाकाव्य के लिए प्रसिद्ध कविरत्न मेधाव्रताचार्य ने अपनी अन्य अनेक रचनाओं के द्वारा सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय जनजागरण का कार्य भलीभांति किया है। इन्हीं कविरत्न मेधाव्रताचार्य की अनतिख्यात साहित्य का विस्तृत समीक्षात्मक अध्ययन इस शोध कार्य का विषय है। जिसके अन्तर्गत सात अध्यायों में कवि के अनतिख्यात साहित्य का परिचय, काव्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन, नवीन एवं मौलिक उद्भावनायें, धर्म-दर्शन, समाज-राष्ट्र की स्थिति, राजनैतिक परिस्थिति तथा समग्र साहित्य की वर्तमान में प्रासंगिकता आदि पर विस्तृत विवेचन किया जायेगा।
3.	**Problem to be studied (approx. 500 words)**	कविरत्न मेधाव्रताचार्य (1893-1964) आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख कवियों में एक है। महाराष्ट्र प्रदेश के नासिक जनपद अन्तर्गत येवला गांव में जन्मे तथा वैदिक विद्यालय कोल्हापुर, नेशनल कॉलेज सूरत आदि में प्राध्यापक रहे, अनेक गुरुकुलों में अध्यापन किया। इनकी सर्वतंत्र-स्वतंत्र लेखनी से महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, उपन्यास, चरितकाव्य, गीतिकाव्य तथा टीकाग्रन्थ आदि लिखे गये। इनके द्वारा प्रणीत 30 से अधिक ग्रन्थों में प्रमुख दयानंददिग्विजयमहाकाव्य, विरजानंदचरित तथा दयानंदलहरी

अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

प्रकृतिसौंदर्य, रुक्मणीहरणम् (नाटक), दयानन्दलहरी, सुखानन्दलहरी, दिव्यानन्दलहरी (लहरीकाव्य), गुरुकुलशतकम्, ब्रह्मचर्यशतकम्, व्रतीन्द्रनित्यानन्दशतकम् (शतककाव्य), विरजानन्दचरितम्, नारायणस्वामिचरितम्, यतींद्रसर्वदानन्दचरितम्, महात्मचरितम्, ज्ञानेन्द्रचरितम् (चरितकाव्य), ईशोपनिषत्काव्यम्, ब्रह्मचर्यमहत्वम् (काव्यानुवाद), कुमुदिनीचन्द्र (उपन्यास), साहित्यसुधा, चारुचरितामृतम्, शुद्धिगङ्गावतारम् (गद्य-काव्य), पिङ्गलछन्दसूत्रम्-वृत्तिमङ्गला, काव्यालंकारसूत्रम्-वृत्तिमङ्गला (टीका) तथा देशाभ्युदयकाव्य, पद्यतरङ्गिणी, सत्यार्थप्रकाशमहिमा, दिव्यसङ्गीतामृतम्, गिरिराजगौरवम्, सुखानन्दगिरिदर्शनम् आदि अन्य रचनाओं के अतिरिक्त भी कविरत्न मेधाव्रताचार्य की प्रकाशित एवं अप्रकाशित कृतियां अनुसन्धेय हैं, जिसमें उनके लघुकाव्य, स्फुटपद्य, प्रशस्तिपरक पद्य तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित संस्कृत गीत व हस्तलिखित पत्र आदि सम्मिलित हैं।

आलोच्य कवि की कृतियां समाज सुधार एवं समाज उत्थान की भावना से आप्लावित हैं। उनके चरितकाव्यों के नायक सामाजिक विद्रूपताओं पर प्रहार करते हैं, राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बनते हैं तथा देशप्रेम के कारण सर्वस्व राष्ट्र को समर्पित करते हैं। यहां मानवमात्र के कल्याण के साथ-साथ गौ आदि प्राणियों की रक्षा एवं प्रकृति-संरक्षण का संदेश भी सुलभ है।

दयानन्दलहरी के नायक ने बालविवाह-निवारण, स्त्रीशिक्षा, दुःखी विधवाओं का पुनर्विवाह तथा अनाथों का उद्धार आदि कार्य किये।

स्वकन्याभ्य: शिक्षामुपनयनदीक्षामथ जना:,
प्रयच्छन्ति स्वैरं वरनिगमसिद्धांतशरणा:।
विवाहं तासां थे विदधति सुयोग्यायुषि शुभम्,
नृदास्यं प्राप्तायां महदुपकृतं योषिति मुने।।१८।।
शुचां संहर्ताऽलम् विधुरविधवानामथ गवाम्,

अनाथानां येषां दिवमुपगता हन्त पितर:।
शिशूनामुद्धर्त्ता विनयगुणदाता जनकवत्,
सदा तेषां पाता त्वमिव सुखदाता निगद क:?।२८।।

दयानंदलहरी में वे स्वामी दयानंद की स्तुति करते हुए उसके सिद्धांतों एवं कार्यों की चर्चा करते हुए पाठकों में अपने राष्ट्र एवं समाज के प्रति आत्मगौरव का भाव जागृत करना कवि का लक्ष्य रहा है। कवि का मंतव्य है, कि स्वामी दयानंद ने अपने देश की उन्नति का रहस्य यहां की जनता को समझाते हुए अपनी भाषा, अपना वेष, अपना धर्म तथा अपनी संस्कृति को अपनाने की शिक्षा दी।

स्वरमुन्नेतुं देशं निजविषयवेशं निजगिरम्,
स्वधर्म स्वां नीतिं श्रुतिविहितरीतिं च सुखदाम्।
उपाधिक्षद् दीक्षां निगममतशिक्षां यस्य स:
स्वदेशस्योत्तंसो जयतु मुनिंहं सोऽभ्युदयकृत्।।४५।।

आचार्य मेधाव्रत ने अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों का भी वर्णन किया है। स्वामी दयानंद के मत को प्रतिपादित करते हुए दयानंददिग्विजयमहाकाव्य में बताया है कि दयानंद के मत में ब्रह्म, जगत तथा जीव तीनों की अनादि सत्ता है। तीनों ही परम सत्य हैं। इनको देखने के लिए ज्ञान नेत्रों की आवश्यकता है। जीव भोक्ता है, और ईश्वर कर्मफलदाता है तथा प्रकृति से संसार बनता है।(१४.८४)

ब्रह्म सत्यं जगत्सत्यं जीवास्सत्यश्च संसृतौ।
ज्ञानतो दृश्यमानं तन्निखिलं सत्यमात्मवत्।।१४.६८।

इस प्रकार हम देख सकते हैं की समीक्ष्य कवि की रचनाओं का मुख्य उद्देश्य समाज सुधार, वैदिक सिद्धांतों का प्रचार एवं राष्ट्रीय भावना का जागरण व मानवीय मूल्यों का उद्बोधन रहा है।

अन्यत्र पर्याप्त शोधकार्य हो जाने के कारण यहां दयानन्ददिग्विजयमहाकाव्य को छोड़कर अन्य विधाओं की रचना जैसे लघुकाव्य, चम्पूकाव्य, चरितकाव्य, गद्यकाव्य, नाटक, लहरी एवं शतक आदि काव्यों तथा टीकाग्रन्थों, स्फुटपद्यों, प्रशस्तिपरकपद्यों,

		गीतों, पत्रों व अन्य कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन किया जायेगा।
4.	**Literature Review on the title: 1) International and 2) National. (Not less than 20 important works)**(approx. 400 words)	• लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से अरविंद कुमार (2021) ने 'पंडित अखिलानंद शर्मा का साहित्यिक अवदान' विषय पर शोधकार्य किया है, जिसमे कविरत्न मेधाव्रताचार्य के समान ही दयानंददिग्विजयम्, दयानंदलहरी, विरजानंदचरितम्, पिंगलछन्द:सूत्र, काव्यालंकारसूत्र टीका आदि शीर्षक से रचना करने वाले पंडित अखिलानंद शर्मा की कृतियों की समीक्षा की ही गई है, साथ ही समान शीर्षक वाले दोनों कवियों के ग्रंथों कि यत्किंचित् तुलना भी प्राप्त होती है। यह कार्य दोनों कवियों की नाम सादृश्य वाली कृतियों में विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन की अपेक्षा दर्शाता है। • वासव रीताबेन (2019) ने 'अखिलानंद और मेधाव्रत शास्त्री कृत दयानंददिग्विजय का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर वीर नर्मद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी से शोध किया है। यह कार्य गुजराती भाषा में है। • 'पंडित अखिलानंद एवं मेधाव्रत आचार्य के दयानंददिग्विजय महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक को अधिकृत करके उषा पन्त (2017) ने शोधकार्य किया है। इस शोध कार्य में दोनों कवियों की व्यक्तित्व एवं दोनों की कृतियों का संक्षिप्त परिचय, दोनों समीक्ष्य महाकाव्यों के काव्यतत्त्वों का अनुशीलन तथा महाकाव्यों में प्रतिबिंबित समाज और संस्कृति का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। • 'कविमेधाव्रतरमाकांतोपाध्यायविरचितयो: दयानंददिग्विजयदयानंदचरितमहाकाव्ययो: तुलनात्मकमध्ययनम्' विषय पर श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली से श्रुति शर्मा ने (2011) शोधकार्य किया है, जिसमें दोनों कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें वर्ण्यविषय, रचनाशैली तथा काव्यशास्त्रीय तत्वों की दृष्टि से तुलना की गई है। दोनों महाकाव्यों की तुलना के कारण अन्य काव्य गौण रह गए हैं। • महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक, हरियाणा से कविता रानी ने

		‘कवि मेधाव्रत आचार्य की कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन’ शीर्षक से शोधकार्य किया है, इस शोध में कविरत्न मेधाव्रताचार्य की प्रमुख कृतियों की समीक्षा करते हुए उनकी रचना शैली पर विशेष प्रकाश डाला गया है। तथापि दयानन्ददिग्विजय और दयानन्दलहरी ही विशेष आधार रहे हैं। कवि के स्फुटपद्य और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं व अप्रकाशित साहित्य और विस्तृत अनुशीलन की अपेक्षा रहता है। • 'दयानंददिग्विजयमहाकाव्य का समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर सत्यपाल सिंह ने लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली से शोधकार्य किया है, जिसमें दयानंददिग्विजय के काव्य पक्ष, भाव पक्ष तथा कवि के परिचय आदि का विस्तृत समीक्षा प्राप्त होता हैं। • ‘आचार्य मेधाव्रत की साहित्यिक रचनाओं में प्रतिबिंबित दयानंद दर्शन' योगेश शास्त्री (2007) ने विषय पर पुस्तक परिमल प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित की। जिसमें कविरत्न मेधाव्रताचार्य के स्वामी दयानन्द सरस्वती परक रचनाओं का दार्शनिक विश्लेषण प्राप्त होता है। • धर्मवीर सिंह (2002) ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ से ‘आचार्य मेधाव्रत और उनकी रचनायें’ विषय पर शोध किया है, जिसमें कवि सभी रचनाओं का संक्षिप्त परिचयात्मक विवरण प्राप्त होता है। इस शोध में भी दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य पर ही विशेष बल दिया गया है, अन्य कृतियों का संक्षिप्त परिचयमात्र है। विस्तृत काव्यशास्त्रीय समीक्षा का अभाव है। • ‘आचार्य मेधाव्रत के दयानंददिग्विजयम् का साहित्यशास्त्रीय परिशीलन’ विषय को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी मीनाक्षी टण्डन (2002) ने शोधकार्य किया है। • आचार्य धर्मवीर शास्त्री ने 'दयानंद सरस्वती के जीवनी पर एक संस्कृत काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन’ विषय पर पंजाब विश्वविद्यालय से शोधकार्य किया है, जिसमें स्वामी दयानंद के जीवनीपरक ग्रंथों का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। आचार्य मेधाव्रत की स्वामी

		दयानंद की जीवनी परक कृतियां जैसे दयानंददिग्विजयम् तथा दयानंदलहरी आदि का इसमें अनुशीलन किया गया है। यह शोधप्रबंध पुस्तक रूप में घूडमल प्रकाशन राजस्थान से प्रकाशित हो चुका है। • 'मेधाव्रताचार्य कृत दयानन्ददिग्विजय एक अध्ययन' शीर्षक को दृष्टिगत रखते हुए शोधार्थी स्नेहलता गुप्ता ने (1975) पीएचडी की है, जिसमें कवि के दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य का विस्तृत अनुशीलन किया गया है। यहां भी अन्य काव्य पर अपेक्षित चर्चा नहीं की गई है। • स्वर्णलता, ने जम्मू विश्वविद्यालय से 'दयानंददिग्विजयम् - एक आलोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया है, जिसमें कवि की प्रतिनिधि रचना दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य की विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत की गई है। • आशुतोष पारीक (2011) ने 'स्वामिदयानन्दमधिकृत्यविरचितेषु महाकाव्येषु युगचेतनायाः अनुशीलनम्,' विषय पर जगद्गुरु रामानंदाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर से शोध कार्य किया है जिसमें आचार्य मेधाव्रत के दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य को भी सम्मिलित किया गया है। उपर्युक्त के अतिरिक्त अन्य विद्वानों ने भी कविरत्न मेधाव्रताचार्य एवं उनके साहित्य आधारित स्वतंत्र ग्रंथ लिखे हैं, शोध कार्य किए हैं तथा शोधालेख प्रकाशित किए हैं। अन्य सम्बन्धित साहित्य में भी समीक्ष्य कवि और उनके साहित्य का यत्किंचित् विवेचन प्राप्त होता है।
5.	**Identification of Research Gaps** (approx. 200 -300 words)	पूर्व शोधकार्यों के आलोक में कहा जा सकता है कि कवि की प्राञ्जल भाषा, ओजपूर्ण और प्रसाद गुण समन्वित शैली पाठकों को आकर्षित करती है। मुख्यतया संस्कृत और कतिपय हिंदी में लिखे उनके मधुर काव्य सहृदय पाठकों का हृदयानुरंजन करते हैं। आर्यसमाज तथा संस्कृतज्ञ पाठकों का एक विशाल वर्ग कवि की साहित्यिक कृतियों से परिचित है और रसास्वादन करता रहा है। इसीलिये आधुनिक संस्कृत साहित्य जगत के महत्वपूर्ण साहित्यकार कविरत्न मेधाव्रत आचार्य की कृतियों को विभिन्न विश्वविद्यालयों में

		अनेक शोधकार्यों का विषय बनाया गया है। विद्वानों ने उनके साहित्य संसार को आधार बनाकर स्वतंत्र ग्रंथों का भी लेखन किया है। आलोच्य कवि से संबंधित उपलब्ध शोधपरक (शोधप्रबंध, शोधपत्र, समीक्षात्मक ग्रंथ) साहित्य प्रकृत शोधकार्य हेतु द्वितीयक स्रोत होगा। **शोध अंतराल** शोधार्थी ने पूर्व के शोधकार्यों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला कि आचार्य मेधाव्रत का विस्तृत रचनासंसार गंभीर शोध की अपेक्षा रखता है। उनके दयानन्ददिग्विजयमहाकाव्य का समीक्षात्मक, काव्यशास्त्रीय तथा तुलनात्मक आदि अनेकविध अध्ययन हुआ है। परन्तु आज भी दयानन्दलहरी आदि लहरीकाव्यों, शतककाव्यों, नाटकों, चरितप्रधान खंडकाव्यादि पर तथा टीकाओं व गीतों पर स्वतंत्र गंभीर विस्तृत शोध तो अपेक्षित है ही, अन्य अप्रकाशित कृतियों का अन्वेषण भी आवश्यक है। अतः कविरत्न के महाकाव्येतर समग्र साहित्य पर प्रकृत शोध में विस्तृत समीक्षा करने का प्रयास होगा।
6.	**Scope and Objectives of the Study** (approx. 500 words)	20वीं शताब्दी के प्रमुख संस्कृत कवियों में कविरत्न मेधाव्रताचार्य का स्थान महत्वपूर्ण है। जिन्होंने ब्रिटिश शासनकाल में अपनी सर्वतंत्र-स्वतंत्र लेखनी को प्राय: संस्कृत की सभी प्रसिद्ध विधाओं पर साधिकार चलाकर जन-जागरण का कार्य किया। संप्रति उनके दयानन्ददिग्विजयमहाकाव्य के अतिरिक्त अन्य कृतियों से समाज प्राय: अनभिज्ञ है। उनके दयानन्ददिग्विजयमहाकाव्य पर अन्यान्य दृष्टिकोणों से विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोधकार्य हो चुके हैं, तथापि उनके खंडकाव्य, लघुकाव्य, शतककाव्य आदि विधाओं में लिखित साहित्य अधुनापि अन्वेषण और शोध की अपेक्षा रखता है। इसलिए आवश्यक है कि उनके महाकाव्येतर साहित्य पर स्वतंत्र शोध कार्य किया जाए। जिससे सहृदय पाठकों, संस्कृतज्ञों तथा समीक्ष्य कवि के आर्यसमाजी प्रशंसकों व जनसामान्य को उनकी कृतियों का परिचय तथा स्वतंत्र गम्भीरतापूर्ण समीक्षा एकत्र ही सुलभ हो सके।

		समाज, धर्म एवं राष्ट्र को समर्पित समीक्ष्य कवि का स्तुत्य जीवनवृत्त भी विस्तारपूर्वक इस शोध के माध्यम से समाज के सम्मुख आ सकेगा। आज वैचारिक विकलता की ओर बढ़ते समाज को इस प्रकार के प्रेरक व्यक्तित्व का परिचय संजीवनी का कार्य करेगा। दयानन्ददिग्विजय के अतिरिक्त पं. अखिलानंद शर्मा कृत दयानन्दलहरी, विरजानंदचरित, छन्द:सूत्र, काव्यालंकारसूत्र की टीकाओं के समान शीर्षकों से लिखी गई रचनाओं की यथासंभव संक्षिप्त तुलना भी शोध का विषय होगी। सहृदय पाठक एवं काव्यशास्त्र के शोधार्थी कवि के प्राय: श्रृंगार रस से विवर्जित स्वरचित उदाहरण से युक्त टीकाग्रंथों सदृश नवीन उद्भावनाओं से अवगत हो सकें, तथा कवि के विपुल साहित्य की काव्याशास्त्रीय विशेषताओं व वैदुष्य से पाठकों और शोधचिकीर्षुओं को अवगत कराना नितांत आवश्यक प्रतीत होता है। प्रस्तुत शोध कार्य इस दिशा में विनम्र प्रयास होगा। **शोध अध्ययन के उद्देश्य** • आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों में समीक्ष्य कवि का स्थान बतलाना। • कवि के विविधविधाविस्तृत कर्तृत्त्व एवं प्रेरक व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना। • कवि की रचनाधर्मिता या काव्यकौशल की समीक्षा करना। • समीक्ष्य कवि की कृतियों पर पूर्ववर्ती कवियों का प्रभाव ज्ञात करना। • समीक्ष्य कृतियों में तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक स्थिति ज्ञात करना।
7.	**Research Questions and Hypothesis** (approx. 500 words)	'कविरत्न मेधाव्रताचार्य की अनतिख्यात रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन' मुख्य विषय के अंतर्गत निम्नांकित उपविषय/शोधप्रश्न होंगे। 1. आधुनिक संस्कृत साहित्य में समीक्षा कवि का स्थान एवं समकालीन कवियों से तुलना। 2. कवि के अनतिख्यात साहित्य का विस्तृत परिचय। 3. कवि की रचनाधर्मिता का मूल्यांकन।

		4. आलोच्य साहित्यगत धर्म-दर्शन, अध्यात्म तथा वैदिकतत्त्व। 5. तत्कालीन समाज की स्थिति एवं वर्तमान में सामाजिक उपयोगिता एवं प्रासंगिकता। 6. समाज, राष्ट्र, संस्कृति एवं मानवीय चेतना विषयक समीक्षा तथा साम्प्रतिक नीति-निर्माण में उसका उपयोग। **प्राक्कल्पना (Hypothesis)** • समीक्ष्य कवि आधुनिक संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। • कवि ने संस्कृत की प्रसिद्ध विधाओं के साथ-साथ नवीन उद्भावनाएं भी उद्भावित की होगीं। • आलोच्य कवि के समग्र साहित्य में प्रसादगुणोपेत सरल-सरस पदावली में चरितप्रधान काव्यों की अधिकता है। • समीक्ष्य कवि पर पूर्ववर्ती तथा समकालीन कवियों का प्रभाव होगा। • कवि की रचनायें तत्कालीन समाज का प्रतिबिंबन करने में समर्थ होगीं।
8.	**Research Methodology** (approx. 500 words)	शोधकार्य में प्रमुखत: समीक्षात्मक एवं विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा। • सर्वेक्षण विधि द्वारा कवि के समग्र साहित्य एवं जीवनीपरक घटनाओं सम्बन्धी समंकों का संकलन करके प्रकाशित रचनाओं के विभिन्न संस्करण एवं अप्रकाशित की वर्तमान अवस्थिति का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। • शोधप्रबन्ध के अन्तिम अध्याय में प्रसिद्ध काव्यशास्त्रीय प्रस्थानों के आलोक में काव्यतत्त्वों की समीक्षा की जाएगी, जिसमें विश्लेषणात्मक विधि प्रयुक्त होगी। देश-विदेश के विभिन्न पुस्तकालयों, संग्रहालयों व आर्यसमाज मन्दिरों आदि से विषय संबंधी पाठ्य सामग्री संकलित की जाएगी। कविरत्न मेधाव्रताचार्य के मूलग्रंथ शोध में प्राथमिक स्रोत तथा अन्य संदर्भग्रंथ द्वितीयक स्रोत होंगे। विभिन्न वेबसाइट्स और आर्काइव तथा विषय संबंधी विद्वानों के साक्षात्कार व पत्र-पत्रिकायें सामग्री संकलन

		में सहयोगी सिद्ध होंगे।
9.	**Framework and Pathbreaking Aspects of the Research** (300 words)	शोधकार्य निम्नवत् अध्याय-विभाजन करके सम्पन्न किया जायेगा। • भूमिका • प्रथम अध्याय **आधुनिक संस्कृत साहित्य और कविरत्न मेधाव्रताचार्य** • द्वितीय अध्याय **कवि के साहित्य का सामान्य परिचय** • तृतीय अध्याय **समीक्ष्य कृतियों का काव्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन** • चतुर्थ अध्याय **समीक्ष्य कृतियों में दार्शनिक, नैतिक तथा वैदिक तत्त्व** • पञ्चम अध्याय **आलोच्य साहित्यगत समाज, संस्कृति, राष्ट्र एवं मानवीय चेतना** • षष्ठ अध्याय **समीक्ष्य साहित्य की वर्तमान में प्रासङ्गिकता एवं उपादेयता** • सप्तम अध्याय **उपसंहार एवं निष्कर्ष** परिशिष्ट सन्दर्भग्रन्थसूची प्रस्तावित शोधकार्य 5 वर्षों में पूर्ण होगा। जिसे षड्मासिक विभाजन पूर्वक कार्ययोजना बनाकर निम्नवत् पूर्ण किया जाएगा। • **प्रथम छह मास-** शोधप्रविधि से संबंधित षाड्मासिकपाठ्यक्रम/कोर्स वर्क (यह पूर्ण हो चुका है) • **द्वितीय छह मास-** आधुनिक संस्कृत साहित्य विशेषता 20वीं शताब्दी के संस्कृत कवियों का विशेष अध्ययन तथा उनमें आचार्य मेधाव्रत की अवस्थिति का अनुसंधान। • **तृतीय छह मास-** आलोच्य कवि के दुर्लभ प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थों की गवेषणा।

		• **चतुर्थ छह मास**-प्राप्त सामग्री का विश्लेषण एवं शोध प्रबन्ध की भूमिका एवं प्रथम अध्याय का लेखन। • **पंचम छह मास**- द्वितीय अध्याय लेखन। • **षष्ठ छह मास**- तृतीय अध्याय लेखन। • **सप्तम छह मास**- चतुर्थ अध्याय लेखन। • **अष्टम छह मास**- पंचम अध्याय लेखन। • **नवम छह मास**- षष्ठ अध्याय लेखन । • **दशम छह मास**- सप्तमअध्याय तथा निष्कर्ष अथवा उपसंहार लेखन व शोधप्रबन्ध विश्वविद्यालय को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किया जायेगा।
10.	**Research Outcomes and Impact** (approx. 350 words)	प्रस्तुत शोधकार्य से संस्कृत साहित्य के पाठकों, शोध चिकीर्षुओं एवं जनसामान्य को लाभ होगा। कवि की प्रांजल, ओजपूर्ण और प्रसादगुण समन्वित शैली सहृदय पाठकों का हृदयानुरंजन करेगी। भावी शोधार्थियों को नूतन शोधकार्यों की दृष्टि प्राप्त होगी। वे शास्त्रीय विषयों की नवीन उद्धावनाओं से भी परिचित होंगे। इस शोध का समाज में व्याप्त कुरीतियों के प्रशमन तथा मानवीय मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण अवदान रहेगा। संप्रतिक समस्याओं के निदान जैसे- प्रकृति संरक्षण, अति आधुनिकीकरण के कारण विलुप्त होते सांस्कृतिक-सामाजिक मूल्यों की रक्षा, महिला सशक्तिकरण, सांप्रदायिक-सद्धाव, भाईचारा आदि संबंधित उच्च मानवीय आदर्शों का प्रतिपादन करने में सहयोग मिलेगा। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के नायकों, प्रमुख समाज सुधारक महापुरुषों के चरितप्रधान काव्यों से भावी पीढ़ी में उन जैसा आदर्श जीवन-निर्माण की प्रेरणा मिलेगी। संस्कृत साहित्य के नए कवियों को साहित्य संबंधी नवीन तथ्यों एवं प्रस्थापनाओं से परिचय होगा। कविरत्न मेधाव्रताचार्य के व्यक्तित्व एवं साहित्य के अनेक अनालोचित पक्षों पर प्रकाश पडेगा। उनका साहित्य पूर्ववर्ती एवं समकालीन संस्कृत साहित्यकारों से कितना प्रभावित है, यह भी प्रकृत शोध से स्पष्ट हो सकेगा।

11.	**Expected Contribution of the Study to Existing Body of Knowledge** (approx. 100 words)	समीक्ष्य कवि की तत्कालीन पत्र पत्रिकाओं में या स्वतंत्र प्रकाशित अनेक कृतियां दुर्लभ या अप्राप्य हैं, जिन्हें अन्वेषित कर समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया जाएगा। कवि के महाकाव्येतर साहित्य पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है, अतः इस शोध कार्य द्वारा अनतिख्यात रचनाओं का समीक्षात्मक अध्ययन नवीन योगदान होगा। प्रचलित काव्यशास्त्रीय लक्षणग्रन्थों में प्रायः श्रृंगारिक उदाहरण दिये जाते हैं, जबकि आलोच्य कवि ने परोपकार, समाचार, दया, करुणा, अध्यात्म, समाज-सेवा आदि मानवीय मूल्यों पर आधारित स्वरचित पद्यों से युक्त काव्यालंकारसूत्र एवं पिंगलछन्दःसूत्र की टीकायें लिखीं हैं, जो कोमलमति बालकों हेतु अत्यंत उपयोगी हो सकते हैं। ये टीकाग्रन्थ भी प्रस्तुत शोध का विषय रहेंगे। कवि के प्रकृतिसौंदर्य नाटक आदि काव्य प्रचलित काव्यपरम्परा में अभूतपूर्व योगदान है, जिससे पर्यावरण संरक्षण जैसे विश्वव्यापी विषय पर नूतन दृष्टि मिलेगी। महिला सशक्तिकरण, ब्रह्मचर्य-महत्व, संस्कार तथा समाजोत्थान विषयक तथा काव्यशास्त्र विषयक कवि की मौलिक उद्भावनायें भी इस शोध से प्रकाशित होंगी।
12.	**Implications of the Study for Policy-making** (approx. 100 words)	नीति-निर्माण में प्रस्तुत शोध से निम्नांकित बिंदुओं पर प्रकाश पड सकता है- • बाल विवाह, दहेज प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, पाखंड, अंधविश्वास आदि सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में। • प्राचीन भारतीय समाज एवं संस्कृति का गौरवबोध जागृत करने में। • प्रकृति/पर्यावरण संरक्षण संबंधी योजनाओं में। • प्रदूषण कम करने संबंधित जन भागीदारी कार्यक्रमों में। • प्रसन्नता-स्तर (Happyness level) संवर्धन संबंधी नीतियों में। • गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था के पुनर्स्थापन में। • सह-अस्तित्व एवं सहिष्णुता के प्रयासों को बढ़ावा देने में। • धार्मिक सद्भाव एवं भाईचारा स्थापित करने में। • मानवीय मूल्यों का संवर्धन करने में।

		• राष्ट्रीय आंदोलन के नायकों के जीवनचरित एवं कार्यों से प्रेरणा हेतु।
13.	**Relevance of the Proposed Study for Society** (approx. 200 words)	कविरत्न मेधाव्रताचार्य की कृतियों में समाज का प्रचुर प्रतिबिंबन मिलता है। 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के समाज का समग्र चित्रण यहां देखा जा सकता है। कवि द्वारा समाज में व्याप्त भेदभाव, पाखंड, अंधविश्वास, छुआछूत, स्त्री के प्रति अपराध, युवाओं में बढ़ते निराशा भाव व अपराधवृत्ति तथा बालविवाह आदि प्रचलित सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया है। इस अध्ययन से सामाजिक कुरीतियों को रेखांकित कर उनका निदान प्रस्तुत किया जा सकेगा। समीक्ष्य कवि द्वारा रचित समाजसुधारक महापुरुषों के जीवनचरित भी समाज के सम्मुख सकेंगे। जिससे तत्कालीन समाज की जटिलतायें, आवश्यकतायें और न्यूनतायें अवगत होने से आधुनिक सामाजिक विषमताओं के निदान हेतु नूतन दृष्टि प्राप्त होगी। अतः इस प्रकार के शोध से समीक्षा कवि का बहुमूल्य साहित्य प्रकाशित एवं समीक्षित होगा, जिससे अनेक सामाजिक समस्याओं के निदान में सहयोग प्राप्त हो सकेगा। संप्रति भौतिकवाद एवं आधुनिकता की अंधी दौड़ में मानवीय मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है, जो चिंताजनक है। अन्यान्य साहित्यिक विधाओं के माध्यम से समीक्ष्य कवि की कृतियां ऐसे वातावरण में नैतिक, चारित्रिक एवं आत्मिक पतन को रेखांकित कर मानवीय चेतना जागृत करने का कार्य कर सकती हैं। अतः इस प्रकार के उत्कृष्ट साहित्य की शोधपरक समीक्षा एवं अन्वेषण समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आदर्श समाज-निर्माण सत् साहित्य के पठन-पाठन, समालोचन एवं शोध से ही संभव है।